12. नेतृत्व कला
(The Art of Leadership)

संसार में प्रायः लोग दूसरों के पीछे-पीछे चलते हैं। जैसे बहुत-सी भेड़ें आगे वाली भेड़ को देखकर उधर ही जाना शुरू कर देती हैं जिधर वह आगे वाली भेड़ जा रही हो, ऐसे ही प्रायः लोगों का हाल होता है। वो रास्ता उन भेड़ों को अपने घर की तरफ़ या चरागाह की तरफ़ ले जाता हो या रेगिस्तान की दिशा में ले जाने वाला हो, वे इस बात पर सोच-विचार नहीं करतीं। इसी प्रकार कई लोग कोई दूसरा रास्ता नहीं निकालते, वे लकीर के फ़कीर होते हैं। जो रस्म-रिवाज चलते आये हैं, उन पर वे पुनर्विचार नहीं करते। गोया वे दूसरों ही की बुद्धि के बल पर चलते हैं। बहुत थोड़े ही लोग ऐसे होते हैं जिनकी बुद्धि रचनात्मक (creative) होती है। **चीज़ों को अधिक आसान बनाने, वस्तु में नवीनता लाने, उसे अधिक उपयोगी बनाने, उसके सौन्दर्य को निखार कम ख़र्च में भी चीज़ को गुणवत्ता देने की योग्यता और कला किसी विरले में ही होती है।**

बहुत-सी संस्थायें, बहुत-से समाज, बहुत-से देश दिनोंदिन अवनति और गिरावट की ओर इस कारण गतिमान होते हैं कि वहाँ कोई अच्छा नेता नहीं होता। उन्हें कोई मार्गदर्शक नहीं मिलता; कोई प्रगति का पथ-प्रदर्शक नहीं होता। बड़ी-बड़ी सेनायें भी युद्ध में तब हार जाती हैं जब उनका नेतृत्व करने वाला कमाण्डर कुशल न हो। परिवार में भी फूट पड़ जाती है यदि उनको कोई मिलाने वाला वरिष्ठ व्यक्ति न हो, जो उन्हें प्रेरित करता रहे। अतः नेतृत्व कला तो ऐसी कला है कि उससे लाखों-करोड़ों व्यक्तियों का अथवा देश और समाज का भला हो सकता है।

परन्तु, नेतृत्व वह कर सकता है जो कोई नये विचार दे सके, नयी योजना बना सके, नया मार्ग दिखला सके, मुर्दा दिल इन्सानों में भी नयी जान डाल सके तथा बिखरे हुए लोगों को एकजुट कर सके और उस संगठन को दिनोंदिन बढ़ाता हुआ चला जाये। नेतृत्व वह कर सकता है जिसे व्यक्तियों की पहचान हो, जिसे यह मालूम हो कि कौन व्यक्ति क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकता है, कौन वफ़ादार है, कौन धोखा दे सकता है, किस पर निर्भर हुआ जा सकता है और किस पर भरोसा करने में खतरा है। जिसके बारे में आम लोग यह कहते हैं कि वह काम का आदमी नहीं है, नेता उसको भी एक ज़िम्मेवार आदमी बना सकता है। वो सब में उमंग-उत्साह ला कर एक नया जोश, नयी जवानी ला सकता है। वो कभी पूर्णतः निराश नहीं होता, उसका अपना उत्साह अदम्य होता है। उसकी चित्त-शक्ति (will power) फ़ौलाद से भी ज़्यादा मजबूत होती है। वो न तोपों से डरता है, न पहाड़ों से घबराता है, न नदी देखकर रुक जाता है, न फिसलन देखकर घर बैठ जाता है बल्कि जो लक्ष्य वो निर्धारित कर लेता है, उस तक पहुँचने के लिए वो अपने-आप ही साधन जुटा लेता

है। साधन स्वयं उसके पास खिंचे आते हैं परन्तु वो अपनी लगन का पक्का होता है। वो ख़ाली हाथ हो और कोई भी उसके साथ न हो तो भी वो एक झंडा ले कर चल पड़ता है और धीरे-धीरे काफ़िला बन उठता है और लोग उसके पीछे-पीछे चल पड़ते हैं और ऐसा नारा लगाते हैं जो आसमान में गूँज उठे। कमज़ोर से कमज़ोर और डरपोक से डरपोक व्यक्ति भी उसके बनाये संगठन में अब शक्ति का अनुभव करते हैं और कुछ कर गुज़रने की सोचते हैं। और तो क्या, अपनी कमर कसकर, सिर पर कफ़न बाँधकर वो जान की बाज़ी लगाने को भी तैयार हो जाते हैं।

परन्तु ऐसा नेतृत्व वो कर सकता है जो न केवल लगन का पक्का हो बल्कि मन का सच्चा हो, चतुर हो परन्तु बे-ईमान न हो। उसकी ईमानदारी ही उसकी सबसे बड़ी साख है। ऊँचे आदर्श, श्रेष्ठ विचार, निःस्वार्थ मन, कम ख़र्च वाली जीवन-पद्धति, सबकी भलाई का दृढ़ संकल्प, सबको अपना कर चलने की योग्यता, सबसे प्रेम और मधुरता का व्यवहार, अनुशासन और प्रशासन की योग्यता व्यक्ति को एक अच्छा नेता बनाती है।

नेता को समय की पहचान होती है। कौन-से अवसर पर क्या कहना और करना है और किस प्रकार के हाव-भाव प्रगट करने हैं, इस बात की उसमें सहज-बुद्धि होती है। वह अच्छे अवसरों को अपने हाथ से टलने नहीं देता। यदि कोई भूल-चूक हो जाये तो उसके लिए वो क्षमा माँगना या प्रायश्चित करना जानता है। लोगों द्वारा प्रशंसा या निन्दा किये जाने पर वो डाँवाडोल नहीं होता। वो सदा चौकन्ना हो कर चलता है और जनता से तालमेल बनाये रखने की उसमें क्षमता होती है। **व्यक्तियों द्वारा किये गये अच्छे कर्मों की वो सराहना करता है और जो कार्य दूसरों ने किया, उनका श्रेय वह उनको ही देता है। दृढ़ मन वाला होने के बावजूद भी वो नम्रचित्त होता है और नम्रचित्त होने के बावजूद भी वो अपने स्वमान को नहीं छोड़ता।**

अतः ज्ञानी और योगी बनने के साथ-साथ 'नेतृत्व कला' का अभ्यास करना भी ज़रूरी है क्योंकि इस द्वारा हम जनशक्ति को संगठित करके बड़े-बड़े कार्य सफलतापूर्वक कर सकते हैं। इससे हम अपने जीवन के समय और शक्ति का भी कई गुणा लाभ लोगों को दे सकते हैं और स्वयं में कई सद्गुणों का विकास कर सकते हैं।

परन्तु जीवन में इस कला का अभ्युदय और विकास तभी हो सकता है जब हमारी बुद्धि का योग ईश्वरीय शक्ति से जुटा हो। यदि परमात्मा से योग न हो तो बार-बार ग़लतियाँ होने की संभावना है और जीवन में कई परीक्षायें आने पर निराश होने की भी संभावना है तथा पथ से हट कर कुपथ पर चलने का भी ख़तरा है। यदि परमात्मा हमारा मार्गप्रदर्शक हो, उससे हमें ईश्वरीय शक्ति का लाभ होता रहे तभी हम स्वयं भी अनुशासनबद्ध हो कर चल सकेंगे और दूसरों का भी कुशल नेतृत्व कर सकेंगे। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम पवित्रता को सुदृढ़ करें और योगशक्ति द्वारा स्वयं को मर्यादित करें और उच्च लक्ष्य को सामने रख कर तथा योगयुक्त हो कर स्वयं आगे बढ़ते हुए दूसरों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा दें।

***